R.P-21-22

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115

Impact Factor 3.811

Webinar Visheshank

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारतीय संत साहित्य : विविध आयाम विशेषांक

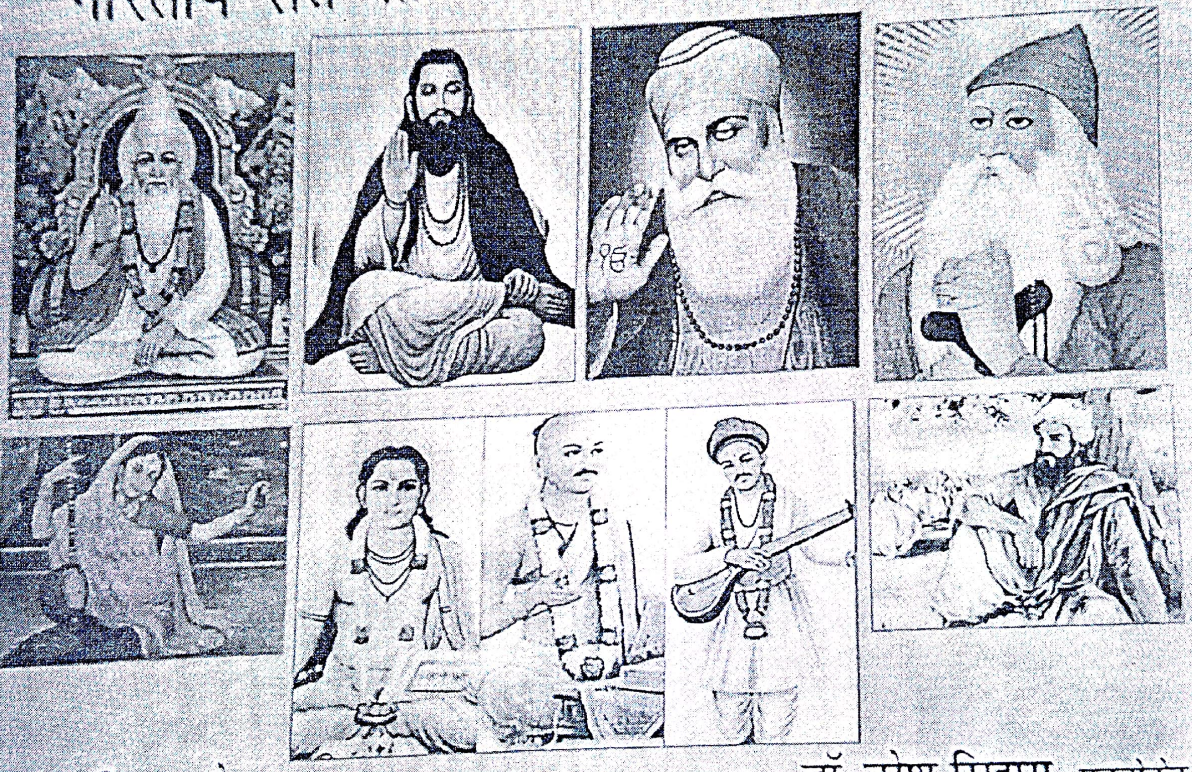

डॉ. पंडित बन्ने
प्रधान सम्पादक

डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट
सम्पादक

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana 127021

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. ISSUE- (भारतीय संत साहित्य : विविध आयाम वेबीनार-विशेषांक) ISSN : 2395-7115

प्रेरणा :
चौ. एम. सिहाग

विशेषांक सम्पादक :
डॉ. पंडित बन्जे
एम.ए. (हिन्दी), एम. फिल,
पीएच.डी. डी.लिट
हिन्दी विभागाध्यक्ष
भारत महाविद्यालय, जेऊर
(म. रेल) सोलापुर (महाराष्ट्र)

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता),
एम.फिल (समाजशास्त्र, हिन्दी) एम. लिब., एल–एल.बी. (ऑनर्स),
डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता), पी.एच.डी. (हिन्दी)
विभागाध्यक्ष हिन्दी एवं शोध निर्देशक
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर–335001 (राज.)

परामर्श मण्डल :
डॉ. इरेश स्वामी (महाराष्ट्र)
डॉ. अर्जुन चव्हाण (महाराष्ट्र)
डॉ. अनंत शिंगाडे (महाराष्ट्र)

सम्पादक मण्डल :
डॉ. नवनाथ गाडेकर,
प्रा. रमेश पाटील

सह सम्पादक :
डॉ. शिवाजी चवरे
डॉ. भाऊसाहेब नवले
डॉ. गंगाधर बिराजदार
डॉ. मनोहर भंडारे
डॉ. संघप्रकाश दुड्डे

प्रकाशक :
गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी–127021 (हरियाणा)

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

MAHAVIDYALAYA SELU

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL REFEREED/REVIEWED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
ISSN 2395-7115

सम्पादकीय सम्पर्क :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,
भिवानी-127021 (हरियाणा)
Email : nksihag202@gmail.com
मो. 09466532152

Published by :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board,
Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA
Email : grsbohal@gmail.com
Facebook.com/bohalshodhmanjusha
Website : www.bohalsm.blogspot.com
WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price
Individual/Institutional : 1100/-

Disclaimer :
1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU. Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
भारतीय संत-साहित्य : विविध आयाम विशेषांक Page No. : 34-36
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भक्तिकालीन संत काव्य की प्रासंगिकता

–डॉ. अर्चना चंद्रकांतराव पत्की
विभागाध्यक्ष, नूतन महाविद्यालय, सेलू

वर्तमान युग में एक मनुष्य दूसरे मनुष्य की वस्तु के रूप में और केवल उपयोगितावादी दृष्टिकोण से देख रहा है। वैष्वीकरण, भूमंडलीकरण और आर्थिक उदारीकरण उस पर हावी होने के कारण उसके मूल्य नष्ट होते हमें दिखाई दे रहे है। मानवी रिश्तों से बढकर उसे आज 'अर्थ' ही महत्वपूर्ण और अंतिम सत्य लग रहा है। आज वह 'अर्थ' के कारण गुमराह हो चुका है। ऐसे गुमराह लोगों को राह दिखाने के लिये हमें आवश्यकता है, भक्तिकालीन संत काव्य पर चिंतन करने की।

संत साहित्य का स्वरूप अत्यंत व्यापक है। विश्व साहित्य में 'भक्ति भावना' की प्रधानता रही है। संत साहित्य धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक सभी क्षेत्र मे उपयुक्त है और यह आज के समाज के लिए उतनाही उपयुक्त है, जितना उस समय उपयुक्त था। वैसे देखा जाये तो, 'संत' शब्द निर्गुणोपासक के लिए प्रयुक्त किया जाता है। किंतु 'संत' शब्द अत्यंत व्यापक होने के कारण हम उसे हिंदी साहित्य के भक्तिकाल में दिखाई देने वाले सगुण और निर्गुण दोनों ही धाराओंके साहित्य को हम 'संत साहित्य' कह सकते है। कोई साहित्य प्रासंगिक है, जब हम ऐसा कहते है तात्पर्य यह होता है कि वह साहित्य समाजकालीन समाज, संस्कृती और साहित्यिक मुल्यों को प्रतिपादित करनेवाला हो। ऐसे साहित्य का महत्व किसी भी काल में उतना ही महत्वपुर्ण होता है, जितना उस समय था उस साहित्य को हम प्रासंगिक साहित्य कह सकते है। भक्तिकालीन संत साहित्य आज भी उतनाही प्रासंगिक है जितना अपने समय में था।

भक्तिकालीन संत साहित्य हम दोनों भी शाखाओं को अर्थात निर्गुण एवं सगुण शाखाओं की चर्चा करेंगे। इन दोनों शाखाओं के प्रमुख कवि कबीर, जायसी, सूर और तुलसी आदि। संत साहित्य मे सगुण और निर्गुण दोनों रूप स्वीकृत है। दोनो मे प्रमुख है 'भक्ती'। वास्तव में यह भक्ती ही संतो का आदि, मध्य, अंत है। भक्ती ही जीवन शैली, जीवन मूल्य जीवन तथा काव्य का परम लक्ष्य भी है।

हिंदी भक्तिकालीन संत कवि जिस युग मे अवतरीत हुए, उस यूग की धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक परिस्थितीयां विषम थी। राजिनितीक दृष्टि से देखे तो यहॉ शासक मुस्लिम और प्रजा हिंदू थी। शासक कट्टर धार्मिक मानसिकतावाले थे। हिंदूओं पर अत्याचार हो रहा था, धर्म परिवर्तन हो रहे थे। हिंदू – मुस्लिम संघर्ष था। सामाजिक दृष्टि से हिंदू एवं मुस्लिम समाज कई संप्रदायों में बंटां था। समाज में ऊंच–नीच भावना प्रबल थी। छुआछूत की भावना थी। नारी की स्थिती और शोचनीय थी। ऐसे समय भक्तिकालीन संत कवियों का प्रादुर्भाव हुआ। और इन संत कवीओं ने इन सारी समस्याओं को अपनी प्रखर वाणी में फटकारा। संत कवियों

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU. Dist. Parbhani

की भावनाओं को मानव समाज से दूर करने का प्रयास तब भी कर रहा था, और आज भी कर रहा है। भक्तिकालीन संत कवि कबीर, सूर, तुलसी, जायसी, रैदास, दादू, दयाल, गुरुनानक इन सभी ने समाज में व्याप्त बुराईयां, भेद-भाव, भ्रष्टाचार, आडंबर के प्रति विद्रोह किया और एकता स्थापित करने का प्रयास किया। समाज की अव्यवस्था के कारण कबीर दुखी थे। वे संवेदनशील थे। वे कहतें है –

"सुखिया सब संसार है, खावे अरु रोवै।"

वर्तमान युग में भी संवेदनशील व्यक्ति की भी यहीं त्रासदी है आज हमारे भारत देश मे हिंदू-मुसलमान, बौद्ध-जैन, सिख-ईसाई आदि धर्मों के साथ-साथ अनेक धार्मिक 'संप्रदाय' और 'पंथ' दिखाई देते है। इस धर्म-भेद को मिटाकर धार्मिक एकता लाने का प्रयास और मानव – धर्म प्रतिष्ठापित करने का प्रयास इन संत कवियों ने किया है –

"सब हम देखा सोधि कर दूजा नाही आन।
सब घट एकै आत्मा क्या हिंदू-मुसलमान।"

आज धर्म के नाम पर दंगे फसाद हो रहे है। अध्यात्म और धर्म के नाम पर लोग अपने- अपने इष्ट देवों और मंदिर-मस्जिद का संघर्ष करने वाले समाज को जब हम देखते है तो हमें याद आता है, बाबरी मस्जिद का उदाहरण। ऐसे संघर्ष करनेवाले समाज को गुरुनानक महत्त्वपूर्ण संदेश देते है –

"साहिब मेरा एक है, एको है भाई एको है।"

भक्तिकालीन साहित्य में समाज का व्यापक चित्रण हुआ है। समाज का प्रमुख केंद्र बिंदू 'मनुष्य' है और इसी को केंद्र बिंदू मानकर संता ने अपने विचार साहित्य में व्यक्त किये है। तुलसीदासजी का 'रामचरितमानस' नीति और आदर्श का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हम मान सकते है क्योंकि भगवान राम के माध्यम से तुलसीदासजी ने राम को लोकरक्षक, शक्ती, शील एवं सौंदर्य का भंडार माना है। 'रामचरितमानस' में सर्वत्र समन्वय की चेष्टा हुई है। आज के मनुष्य के लिए यह उपदेश चिंतनीय है, किंतु आज का मनुष्य इन नैतिक तत्वों से कोसो दूर है। उसे तुलसी के आदर्श राम को केवल पढना नहीं बल्कि उसके भीतर जो गुण है – दया, क्षमा, अहिंसा, करुणा, त्याग, सदाचार, परोपकार को अपनाना होगा। 'रामचरितमानस' सुनने से कुछ नही होगा उसे आचरण में लाना होगा।

संत साहित्य केवल मनुष्य की बात नहीं करता, वह तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों से प्रभावित रहा है। संत साहित्य जब आदर्श राजा की बात करता है तो निश्चित ही हमारे सम्मुख भगवान 'राम' का नाम आता है। क्योंकि मानस के राम आदर्श राज के रूप मे चित्रित हुए है। वह ऐसा राजा था कि कभी भी अपनी प्रजा को दुःखी नहीं देखता था। किंतु आज हम राजनीतिक तत्व अपने नहीं देखता था आज परिस्थितियों पर थोड़ा दृष्टिक्षेप डाले तो आज आम जनता शासन से त्रस्त है। जनता के दुःख दर्द को समझने वाला कोई नहीं है। राम की तरह आज कोई आदर्श राजा नहीं। कल्याणकारी राज्य व्यवस्था नहीं जिसके कारण व्यवस्था में कुछ परिवर्तन हो।

भक्तिकालीन संतो ने धन को धूलीवत समझा। तत्कालीन समाज मे आज के मानव की तरह धन अधिक न था। आज व्यक्ति धन के पीछे इतना दौड़ रहा है कि वह उसके लिए किसी भी हद तक जा सकता है। संत साहित्य में धन संचय की निंदा हुई। आज कार्यालय में छोटे से छोटा काम करने के लिए रिश्वत ली जाती है।

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU. Dist. Parbhani
NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU
Scanned with OKEN Scanner

[illegible]त से मनुष्य अमीर बनना चाहता है। इसी कारण समाज मे सधन और निर्धनो के बीच की दूरियाँ बढ़ती जा रही है। ऐसी स्थितियों को बदलने के लिए संतो के विचारों की आवश्यकता है। आज मनुष्य के जीवन में निराशा बढ़ गई है। उसके जीवन में आनंद उल्हास नहीं रहा किंतु सूरदास ने जीवन की नीरसता को समाप्त कर उसे सौंदर्य की और अग्रकर जीवन के महत्ता को हमारे समक्ष रखा है। आज हम किसी संत की वाणी से भागवत कथा का रसग्रहण करते है तो, हमे कृष्ण की लीला उसे मुरझाये चेहरे पर प्रफुल्लता संचार होता है।

भक्तिकालीन संत साहित्य को जब हम पढ़ते है तो वह निश्चित ही अकृत्रिम सहज एवं अनुभूतीजन्य लगता है। मनुष्यत्व की भावना को आगे करके जनता मे आत्मगौरव का भाव संत साहित्य ने जगाया समाज के प्रति उनका दृष्टिकोण प्रगतिशील क्रांतिकारी होने के कारण वैचारिक क्रांति का सूत्रपाठ हुआ। आध्यात्मिक साहित्य के साथ–साथ सामाजिक पक्ष प्रस्तुत करनेवाला संत साहित्य है। यदि हमारे देश में हम प्रगत, एकात्म व सुसंस्कृत समाज का निर्माण करना चाहते है, तो निश्चित ही संत साहित्य हमारी सहायता करेगा। क्योंकि समक्ष संसार हो प्रेम के सूत्र मे बांधने की ताकत उसमें है। जिस से हमारे देश का कल्याण होगा। कबीर ने वर्गहीन समाज, तुलसी ने राम–राज्य, जायसी ने हिंदू प्रेम आख्यान काव्य के द्वारा सांप्रदायिक सद्भाव तथा राष्ट्रोत्कर्ष का मंत्र फूंका उस मंत्र को हम गुरुमंत्र की तरह हमारे मन मंदिर मे विंबित करे ताकि आने वाली पिढी के लिये सदैव प्रेरणादायी सिद्ध होगा, जिससे हमारे समाज का कल्याण हो। अतः समाज से एवं आज के युवाओं से यही अपेक्षा है कि वे अपने ज्ञान का व्यावहारिक स्तर पर प्रयोग करे। क्योंकि युवा ही देश का भविष्य है। राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक समस्या व निराकरण कर राष्ट्रोत्थान में सक्रिय भागीदारी कर सकते है। समाज में व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का निर्माण कपड़ों से नही चरित्र से होता है। संत साहित्य जिस चरित्र, सत्य, शील, संयम, संतोष आदि सद्गुण अभिहित है, वे सर्व सद्गुण सभी चरा–चर में स्थित होगें तो सामाजिक उत्थान होगा। यही संत साहित्य की प्रासंगिकता होगी।

Email– patkiac@gmail.com
Mob & 9834213699

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Parbhani